Message from Elizabeth

Chairperson of
Jain World Committee, U.S.A.

Jai Jinendra.

I am happy to know that a new Hindi Edition of "Sachittra Bhagwan Mahavira Jiwan Charitra" authored by you is being published.

This is a very valuable addition for the benefit of humanity around the globe.

Congratulations on publication of your new Hindi book on Jainism.

Elizabeth Leuman

Message

"Sachittra Bhagwan Mahavira Jiwan Charitra"

Respected Ravinder ji and Purshottam ji

Jai Jinendra.

We are happy to know that a new edition of "Sachittra Bhagwan Mahavira Jiwan Charitra" authored by you is being published.

This is a very valuable addition to your extraordinary contribution to the cause of Jainism over the last several years. You have done historic contribution by creating Jainism related material in Punjabi for the first time in the history and also in other languages for the benefit of humanity around the globe.

Congratulations on publication of your new book.

Entire Jain World team from USA and around the globe is proud of our long fruitful association with you and wishes that your continued contribution to the cause of Jainism will be a source of great and constant inspiration for years to come.

Vinod Daryapurkar.
Chairman Jain World Foundation,
Atlanta, U.S.A.

तत्कालीन राष्ट्रपति ज्ञानी जैलसिंह लेखकद्वय को श्रमणोपासक पद से विभूषित करते हुए।(शाल प्राप्त करते हुए श्री पुरूषोत्तम जैन एवं राष्ट्रपति के पीछे खड़े हैं श्री रवीन्द्र जैन)

कृति एवं कृतिकार

प्रस्तुत कृति में भगवान महावीर के जीवन के सम्पूर्ण वृतांत की श्वेताम्बर एवं दिगम्बर मतानुसार व्याख्या करते हुए लेखकद्वय ने अत्यंत सुंदर ढंग से क्रमबद्ध कर पाठकों के लिए विस्तृत जानकारी देने का सुंदर प्रयास किया है। प्रस्तुत ग्रंथ भगवान महावीर के 2600 साला जन्म महोत्सव पर होने वाले कार्यक्रम की शृंखला का भाग है।

श्री पुरुषोत्तम जैन, धूरी (10.11.1946) व श्री रवीन्द्र जैन, मालेरकोटला (23.10.1949) प्रसिद्ध जैन लेखक हैं, जिन्होंने संथारा साधिका उपप्रवर्तिनी साध्वी श्री स्वर्णकांता जी महाराज की प्रेरणा व दिशा-निर्देशन में 50 ग्रंथ लिखे हैं। यह कार्य लगातार जारी है। पंजाबी भाषा के दोनों प्रथम जैन लेखक हैं। पिछले 2600 सालों में किसी भी लेखक ने जैन धर्म विषय में पंजाबी में कोई कार्य नहीं किया। दोनों अनेक जैन संस्थाओं के संस्थापक हैं। जिनमें जैन चेयर पंजाबी विश्वविद्यालय पटियाला, आचार्य आत्माराम जैन भाषण माला पुस्तकालय व अनेक अवार्डों की स्थापना प्रमुख है। कई संस्थाओं ने इनके कार्यों से प्रभावित होकर इन्हें अपनी संस्थाओं का सदस्य बनाया है।

भारत के पूर्व राष्ट्रपति ज्ञान जैल सिंह जी इन्हें राष्ट्रपति भवन में श्रमणोपासक पद से विभूषित कर चुके हैं। भाषा विभाग पंजाब इन दोनों का सम्मान कर चुका है। अनेक जैन संस्थाओं ने इनकी सेवा के कारण इन्हें अनेक पदवियों से सुशोभित किया है। इसी प्रकार दिल्ली में यूनस्को ने **राष्ट्रीय हिन्दी सेवी सहस्त्राब्दी सम्मान** तथा जैन वर्ल्ड फाऊंडेशन यू.एस.ए. ने **ज्वैल ऑफ जैन वर्ल्ड** सम्मान से विभूषित किया है। इनका सारा पंजाबी साहित्य www.jainworld.com पर उपलब्ध है।

दोनों को साहित्य अकादमी के प्रकाशन को Who's and who में योग्य स्थान मिला है। इनकी प्रमुख देन जैन आगमों का प्रथम पंजाबी अनुवाद एवं टीका है। पंजाबी के अतिरिक्त यह हिन्दी भाषा के भी प्रमुख लेखक हैं, जिसका प्रमाण प्रस्तुत ग्रंथ है। इस ग्रंथ में श्वेताम्बर व दिगम्बर मान्यताओं को ध्यान में रखकर पूरा किया है। दोनों जैन धर्म व साहित्य के प्रति समर्पित आत्मा हैं।

-डा. संजय जैन,
सम्पादक विवल विवेक पत्रिका, जालंधर

सचित्र भगवान महावीर जीवन चरित्र

लेखक : पुरुषोत्तम जैन, रवीन्द्र जैन

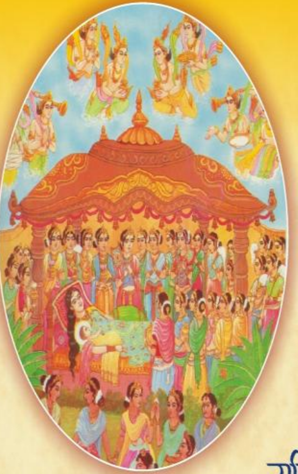

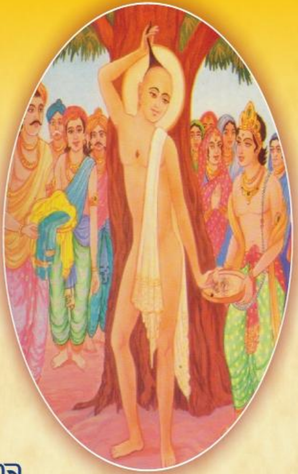

सचित्र

भगवान महावीर जीवन चरित्र

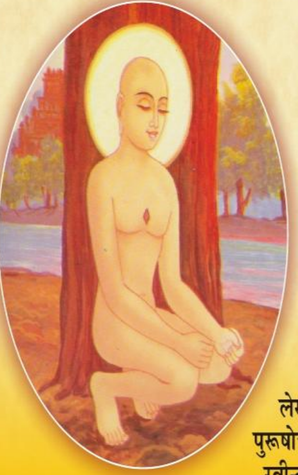

लेखक
पुरूषोत्तम जैन
रवीन्द्र जैन

अभिमत

श्रमण भगवान महावीर जैन धर्म के 24वें तीर्थंकर थे, एक कालजयी व्यक्तित्व हैं। जिनका नाम, सिद्धांत, साधना, उपदेश व तत्व को किसी भी काल के थपेड़े में निष्प्रभावी नहीं होते हैं। वह सदाकाल शाश्वत एक जैसे रहते हैं। प्रस्तुत ग्रंथ 'सचित्र भगवान महावीर' का द्वितीय संस्करण इस ग्रंथ की प्रेरिका साध्वी श्री सुधा जी के जन्म महोत्सव पर प्रकाशित हो रहा है। इस ग्रंथ के लेखक पंजाबी भाषा के प्रथम जैन साहित्यकार के रूप में पहचाने जाने वाले सुश्रावक श्री पुरुषोत्तम जैन व श्री रविन्द्र जैन हैं। इस ग्रंथ के प्रथम संस्करण का मैंने अध्ययन किया है। वर्तमान संशोधित संस्करण में दोनों बन्धु युगलों ने कुछ नए प्रसंग जोड़े हैं। इस ग्रंथ का कुशल संपादन साध्वी श्री सुधा जी की सुशिष्या डा. स्मृति जी ने किया है। यह ग्रंथ एक सर्वमान्य ग्रंथ है, जिसमें विद्वान लेखकों ने श्वेताम्बर व दिगम्बर परम्पराओं के ग्रंथों के अतिरिक्त भारतीय व विदेशी भाषा में लिखे जीवन चरित्रों का सूक्ष्म अध्ययन कर भगवान महावीर का जीवन चरित्र जन-सामान्य के लिए प्रस्तुत किया है। यह ग्रंथ अपने आप में अद्भुत है। मैं लेखक द्वय व ग्रंथ की संपादिका को साधुवाद प्रेषित करता हूं।

- मुनि ज्ञानेन्द्र कुमार